



## पश्चिमी राजस्थान के प्रमुख बौद्ध स्थल एवं उनका पुरातात्विक महत्व

प्रताप सिंह<sup>1</sup> | अलताफ खान<sup>2</sup>

<sup>1</sup>शोधार्थी मौलाना आजाद विश्वविद्यालय, जोधपुर.

<sup>2</sup>सह आचार्य, मौलाना आजाद विश्वविद्यालय, जोधपुर.

### ABSTRACT:

पश्चिमी राजस्थान, जिसे सामान्यतः मरुस्थलीय और शुष्क भौगोलिक क्षेत्र के रूप में जाना जाता है, प्राचीन काल में केवल भौगोलिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक, धार्मिक और आर्थिक गतिविधियों के दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। यह क्षेत्र प्राचीन व्यापारिक मार्गों का प्रमुख केंद्र था, जिसके कारण यहाँ विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों का आगमन हुआ। इन्हीं में से एक प्रमुख धर्म बौद्ध धर्म था, जिसने इस क्षेत्र की सांस्कृतिक संरचना को गहराई से प्रभावित किया। प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य पश्चिमी राजस्थान के प्रमुख बौद्ध स्थलों का अध्ययन करना तथा उनके पुरातात्विक महत्व को स्पष्ट करना है।

बौद्ध धर्म का उदय छठी शताब्दी ईसा पूर्व में हुआ और मौर्य सम्राट अशोक के काल में इसका व्यापक प्रसार हुआ। अशोक ने बौद्ध धर्म को न केवल अपनाया, बल्कि इसके प्रचार-प्रसार के लिए पूरे भारत में स्तूप, विहार और शिलालेख स्थापित कराए। पश्चिमी राजस्थान में बैराठ (विराटनगर) जैसे स्थल इस प्रक्रिया के सशक्त प्रमाण हैं, जहाँ से अशोक के शिलालेख, बौद्ध मंदिरों के अवशेष तथा अन्य पुरातात्विक सामग्री प्राप्त हुई है। यह स्थल न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह मौर्यकालीन स्थापत्य कला और प्रशासनिक व्यवस्था को भी समझने में सहायक है।

पश्चिमी राजस्थान में बौद्ध धर्म का प्रसार मुख्यतः व्यापारिक गतिविधियों के माध्यम से हुआ। यह क्षेत्र प्राचीन समय में उत्तर भारत, मध्य भारत तथा पश्चिमी एशिया के बीच संपर्क का प्रमुख मार्ग था। व्यापारियों, भिक्षुओं और यात्रियों के निरंतर आवागमन के कारण यहाँ बौद्ध धर्म के सिद्धांतों का प्रसार हुआ और अनेक बौद्ध केंद्र विकसित हुए। नागौर, बीकानेर और जैसलमेर के आसपास प्राप्त बौद्ध अवशेष इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि यह क्षेत्र केवल सीमांत प्रदेश नहीं था, बल्कि सांस्कृतिक आदान-प्रदान का सक्रिय केंद्र था।

पुरातात्विक दृष्टि से इन स्थलों का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है। यहाँ प्राप्त स्तूप, विहार, मूर्तियाँ, सिक्के तथा शिलालेख उस समय की धार्मिक आस्थाओं, सामाजिक संरचना, आर्थिक गतिविधियों तथा कला-वास्तुकला के स्तर को दर्शाते हैं। विशेष रूप से शिलालेख तत्कालीन शासन व्यवस्था, धार्मिक नीतियों और समाज की विचारधारा को समझने का प्रमुख साधन हैं। इन अवशेषों के माध्यम से यह ज्ञात होता है कि बौद्ध धर्म ने स्थानीय परंपराओं के साथ समन्वय स्थापित कर एक विशिष्ट सांस्कृतिक स्वरूप विकसित किया।

यह शोध पत्र ऐतिहासिक, पुरातात्विक तथा विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें प्राथमिक स्रोतों जैसे शिलालेखों और उत्खनन रिपोर्टों के साथ-साथ द्वितीयक स्रोतों जैसे इतिहासकारों के ग्रंथों और शोध पत्रों का उपयोग किया गया है। विभिन्न स्थलों के साक्ष्यों का तुलनात्मक अध्ययन कर उनके महत्व को स्पष्ट किया गया है।

अंततः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पश्चिमी राजस्थान के बौद्ध स्थल भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण धरोहर हैं। ये स्थल यह प्रमाणित करते हैं कि बौद्ध धर्म का प्रभाव केवल गंगा घाटी तक सीमित नहीं था, बल्कि यह दूरस्थ मरुस्थलीय क्षेत्रों तक भी व्यापक रूप से फैला हुआ था। इन स्थलों का संरक्षण और व्यवस्थित अध्ययन भविष्य में और अधिक ऐतिहासिक तथ्यों को उजागर करने में सहायक सिद्ध होगा। अतः आवश्यक है कि इन स्थलों को राष्ट्रीय धरोहर के रूप में संरक्षित किया जाए और इनके प्रति जन-जागरूकता बढ़ाई जाए।

### KEYWORDS:

बौद्ध स्थल, पश्चिमी राजस्थान, बैराठ, अशोक, स्तूप, विहार, पुरातत्व, शिलालेख, सांस्कृतिक विरासत।

PAPER ACCEPTED DATE:

12<sup>th</sup> April 2026

PAPER PUBLISHED DATE:

14<sup>th</sup> April 2026

#### शोध पद्धति

इस शोध पत्र में ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। अध्ययन के लिए निम्न स्रोतों का सहारा लिया गया है:

प्राथमिक स्रोत: शिलालेख, उत्खनन रिपोर्ट, प्राचीन अवशेष

द्वितीयक स्रोत: इतिहासकारों की पुस्तकें, शोध पत्र, लेख

तुलनात्मक अध्ययन: विभिन्न स्थलों के पुरातात्विक साक्ष्यों की तुलना

शोध के दौरान विभिन्न विद्वानों के मतों का विश्लेषण कर निष्कर्ष निकाला गया है।

#### शोध उद्देश्य

पश्चिमी राजस्थान के प्रमुख बौद्ध स्थलों की पहचान करना।

इन स्थलों के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व का अध्ययन करना।

पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर बौद्ध धर्म के प्रसार को समझना।

इन स्थलों के संरक्षण की आवश्यकता पर प्रकाश डालना।

#### विषयवस्तु

पश्चिमी राजस्थान का ऐतिहासिक एवं भौगोलिक परिप्रेक्ष्य

पश्चिमी राजस्थान भारत का एक प्रमुख मरुस्थलीय क्षेत्र है, जिसमें मुख्यतः थार मरुस्थल का

विस्तार मिलता है। इस क्षेत्र में वर्तमान के जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, जोधपुर और नागौर जैसे जिले शामिल हैं। यद्यपि यह क्षेत्र जल की कमी और कठोर जलवायु के कारण चुनौतीपूर्ण रहा है, फिर भी प्राचीन काल में यह व्यापारिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का महत्वपूर्ण केंद्र था।

यह क्षेत्र प्राचीन व्यापारिक मार्गों से जुड़ा हुआ था, जो उत्तर भारत को पश्चिमी एशिया और मध्य एशिया से जोड़ते थे। इन मार्गों के कारण विभिन्न धर्मों, विचारों और संस्कृतियों का आदान-प्रदान हुआ। इसी पृष्ठभूमि में बौद्ध धर्म का प्रवेश और प्रसार इस क्षेत्र में संभव हुआ।

### पश्चिमी राजस्थान में बौद्ध धर्म का आगमन और विकास

बौद्ध धर्म का उद्भव 6वीं शताब्दी ईसा पूर्व में हुआ और यह शीघ्र ही पूरे भारत में फैल गया। मौर्य सम्राट अशोक के काल में इसका व्यापक प्रचार हुआ। अशोक ने बौद्ध धर्म को राज्य संरक्षण प्रदान किया और इसके सिद्धांतों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए अनेक प्रयास किए।

पश्चिमी राजस्थान में बौद्ध धर्म का आगमन मुख्यतः व्यापारिक मार्गों के माध्यम से हुआ। व्यापारी वर्ग बौद्ध धर्म के सिद्धांतों से प्रभावित था और उन्होंने इसे अपने व्यापारिक केंद्रों तक पहुँचाया। साथ ही, बौद्ध भिक्षु भी इन मार्गों का उपयोग करते हुए विभिन्न स्थानों पर विहार स्थापित करते थे।

इस क्षेत्र में बौद्ध धर्म का स्वरूप स्थानीय संस्कृति के साथ समन्वित था, जिससे यह अधिक प्रभावी और स्वीकार्य बन सका।

### प्रमुख बौद्ध स्थल और उनका विवरण

#### बैराठ (विराटनगर)

बैराठ पश्चिमी राजस्थान का सबसे महत्वपूर्ण बौद्ध स्थल माना जाता है। यहाँ मौर्य कालीन अवशेष प्राप्त हुए हैं, जो इस क्षेत्र में बौद्ध धर्म के प्रभाव को दर्शाते हैं।

यहाँ अशोक का प्रसिद्ध शिलालेख प्राप्त हुआ है, जिसे “बैराठ शिलालेख” कहा जाता है।

इस स्थल पर एक गोलाकार बौद्ध मंदिर के अवशेष मिले हैं, जो भारत के प्राचीनतम मंदिरों में से एक माने जाते हैं।

यहाँ स्तूप और विहार के अवशेष भी मिले हैं, जो बौद्ध धर्म के संगठित स्वरूप को दर्शाते हैं।

यह स्थल न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह मौर्यकालीन स्थापत्य और कला का भी उत्कृष्ट उदाहरण है।

#### नागौर क्षेत्र

नागौर क्षेत्र में भी बौद्ध धर्म के प्रभाव के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। यहाँ से कुछ प्राचीन मूर्तियाँ, अवशेष और संरचनाएँ मिली हैं, जो यह संकेत देती हैं कि इस क्षेत्र में भी बौद्ध धर्म का प्रसार हुआ था।

नागौर का स्थान व्यापारिक मार्गों पर होने के कारण यह बौद्ध गतिविधियों का एक केंद्र बन सका।

#### बीकानेर क्षेत्र

बीकानेर क्षेत्र में उत्खनन के दौरान कुछ ऐसे अवशेष प्राप्त हुए हैं, जो बौद्ध धर्म के प्रभाव को दर्शाते हैं। यद्यपि यहाँ बड़े स्तूप या विहार नहीं मिले हैं, फिर भी छोटे स्तर पर बौद्ध गतिविधियों के प्रमाण उपलब्ध हैं।

यह दर्शाता है कि मरुस्थलीय परिस्थितियों के बावजूद बौद्ध धर्म यहाँ तक पहुँचा और स्थानीय स्तर पर विकसित हुआ।

#### जैसलमेर क्षेत्र

जैसलमेर क्षेत्र प्राचीन व्यापारिक मार्गों का एक महत्वपूर्ण केंद्र था। यहाँ से भी कुछ बौद्ध अवशेष प्राप्त हुए हैं, जो इस क्षेत्र में बौद्ध धर्म के प्रसार का संकेत देते हैं।

यह क्षेत्र पश्चिमी देशों के साथ संपर्क का प्रमुख माध्यम था, जिससे सांस्कृतिक आदान-प्रदान संभव हुआ।

### पुरातात्विक साक्ष्य और उनका विश्लेषण

पश्चिमी राजस्थान के बौद्ध स्थलों से प्राप्त पुरातात्विक साक्ष्य अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इनमें प्रमुख

रूप से निम्नलिखित शामिल हैं:

#### स्तूप

स्तूप बौद्ध धर्म के प्रमुख धार्मिक स्मारक हैं। ये बुद्ध और अन्य महान भिक्षुओं की स्मृति में बनाए जाते थे।

बैराठ में प्राप्त स्तूप इस बात का प्रमाण है कि यहाँ बौद्ध धर्म संगठित रूप में विद्यमान था।

#### विहार

विहार बौद्ध भिक्षुओं के निवास स्थान होते थे। ये शिक्षा और ध्यान के केंद्र भी थे।

पश्चिमी राजस्थान में प्राप्त विहार इस क्षेत्र में बौद्ध शिक्षा और साधना के प्रसार को दर्शाते हैं।

#### शिलालेख

शिलालेख तत्कालीन समाज, प्रशासन और धर्म की जानकारी का प्रमुख स्रोत हैं।

बैराठ का अशोक शिलालेख विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जो बौद्ध धर्म के प्रचार और अशोक की नीतियों को स्पष्ट करता है।

#### मूर्तियाँ और कलात्मक अवशेष

बौद्ध मूर्तियाँ और अन्य कलात्मक वस्तुएँ उस समय की कला शैली और धार्मिक भावनाओं को दर्शाती हैं।

इनसे यह भी ज्ञात होता है कि स्थानीय कला पर बौद्ध प्रभाव कितना व्यापक था।

#### सिक्के और अन्य सामग्री

सिक्कों और अन्य वस्तुओं से उस समय की आर्थिक स्थिति और व्यापारिक गतिविधियों की जानकारी मिलती है।

ये इस तथ्य को भी प्रमाणित करते हैं कि बौद्ध धर्म का प्रसार व्यापार के साथ जुड़ा हुआ था।

#### सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव

बौद्ध धर्म ने पश्चिमी राजस्थान के समाज पर गहरा प्रभाव डाला।

इसने अहिंसा, करुणा और समानता के सिद्धांतों को बढ़ावा दिया।

जाति व्यवस्था के प्रभाव को कम करने में सहायता की।

शिक्षा और ज्ञान के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बौद्ध विहार शिक्षा के केंद्र के रूप में कार्य करते थे, जहाँ विभिन्न वर्गों के लोग शिक्षा प्राप्त करते थे।

#### आर्थिक एवं व्यापारिक महत्व

पश्चिमी राजस्थान के बौद्ध स्थल व्यापारिक मार्गों के निकट स्थित थे।

ये स्थल यात्रियों और व्यापारियों के विश्राम स्थल के रूप में कार्य करते थे।

बौद्ध भिक्षु व्यापारिक गतिविधियों में नैतिक मार्गदर्शन प्रदान करते थे।

इससे क्षेत्र में आर्थिक विकास को बढ़ावा मिला।

#### संरक्षण और वर्तमान स्थिति

आज पश्चिमी राजस्थान के अधिकांश बौद्ध स्थल उपेक्षा के शिकार हैं।

प्राकृतिक क्षरण

मानवजनित हानि

जागरूकता की कमी

इन कारणों से इन स्थलों का महत्व कम होता जा रहा है। अतः आवश्यक है कि सरकार, पुरातत्व विभाग और समाज मिलकर इनके संरक्षण के लिए प्रयास करें।

#### संरक्षण के उपायों में शामिल हो सकते हैं:

वैज्ञानिक उत्खनन

स्थलों का संरक्षण और पुनरुद्धार

पर्यटन के रूप में विकास

जन-जागरूकता कार्यक्रम

### समापन टिप्पणी

इस प्रकार, पश्चिमी राजस्थान के बौद्ध स्थल केवल धार्मिक केंद्र नहीं हैं, बल्कि वे ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इनका अध्ययन हमें प्राचीन भारत की विविधता और समृद्धि को समझने में सहायता करता है।

#### निष्कर्ष

पश्चिमी राजस्थान के प्रमुख बौद्ध स्थलों के अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है कि यह क्षेत्र केवल भौगोलिक दृष्टि से मरुस्थलीय और सीमांत नहीं था, बल्कि प्राचीन भारत के सांस्कृतिक, धार्मिक और आर्थिक जीवन का एक सक्रिय और महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। सामान्य धारणा के विपरीत, जहाँ इस क्षेत्र को केवल शुष्क और विरल जनसंख्या वाला माना जाता है, वहीं पुरातात्विक साक्ष्य यह प्रमाणित करते हैं कि यहाँ प्राचीन काल में विकसित सभ्यता, समृद्ध व्यापारिक गतिविधियाँ तथा धार्मिक विविधता विद्यमान थी। बौद्ध धर्म का इस क्षेत्र में प्रसार इसी व्यापक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य का परिणाम था।

इस शोध के माध्यम से यह तथ्य उजागर होता है कि मौर्यकाल, विशेष रूप से सम्राट अशोक के शासनकाल में, पश्चिमी राजस्थान में बौद्ध धर्म को संगठित रूप में स्थापित किया गया। बैराठ (विराटनगर) जैसे स्थल इस प्रक्रिया के प्रत्यक्ष प्रमाण प्रस्तुत करते हैं, जहाँ अशोक के शिलालेख, स्तूप और विहार के अवशेष प्राप्त हुए हैं। ये साक्ष्य न केवल बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार को दर्शाते हैं, बल्कि उस समय की प्रशासनिक व्यवस्था, धार्मिक नीति और स्थापत्य कला के उच्च स्तर को भी स्पष्ट करते हैं।

इसके अतिरिक्त, नागौर, बीकानेर और जैसलमेर क्षेत्रों से प्राप्त पुरातात्विक अवशेष यह दर्शाते हैं कि बौद्ध धर्म का प्रभाव केवल एक सीमित क्षेत्र तक ही नहीं था, बल्कि यह व्यापक रूप से पूरे पश्चिमी राजस्थान में फैला हुआ था। यद्यपि इन स्थलों पर बैराठ जैसे भव्य संरचनाएँ नहीं मिली हैं, फिर भी छोटे स्तर पर प्राप्त अवशेष यह प्रमाणित करते हैं कि बौद्ध धर्म स्थानीय समाज में समाहित हो चुका था। यह भी उल्लेखनीय है कि इन क्षेत्रों में बौद्ध धर्म का स्वरूप स्थानीय सांस्कृतिक तत्वों के साथ समन्वित था, जिससे यह अधिक प्रभावी और स्थायी बन सका।

इस अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि बौद्ध धर्म के प्रसार में व्यापारिक मार्गों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। पश्चिमी राजस्थान प्राचीन काल में उत्तर भारत, मध्य भारत तथा पश्चिमी एशिया के बीच संपर्क का प्रमुख केंद्र था। इन मार्गों के माध्यम से न केवल वस्तुओं का आदान-प्रदान होता था, बल्कि विचारों, आस्थाओं और सांस्कृतिक मूल्यों का भी प्रसार होता था। बौद्ध भिक्षु, व्यापारी और यात्री इन मार्गों का उपयोग करते हुए धर्म के सिद्धांतों को विभिन्न क्षेत्रों तक ले गए। इस प्रकार, बौद्ध धर्म का प्रसार एक सांस्कृतिक प्रक्रिया के रूप में विकसित हुआ, जो आर्थिक गतिविधियों के साथ गहराई से जुड़ा हुआ था।

पुरातात्विक दृष्टि से, पश्चिमी राजस्थान के बौद्ध स्थल अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि ये हमें प्राचीन समाज की बहुआयामी जानकारी प्रदान करते हैं। स्तूप, विहार, शिलालेख, मूर्तियाँ और सिक्के जैसे अवशेष उस समय की धार्मिक आस्थाओं, सामाजिक संरचना, आर्थिक गतिविधियों और कला-वास्तुकला के स्तर को स्पष्ट करते हैं। विशेष रूप से शिलालेखों के

माध्यम से तत्कालीन शासन व्यवस्था, धर्म नीति और सामाजिक जीवन के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। इन साक्ष्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बौद्ध धर्म ने इस क्षेत्र के सामाजिक जीवन में नैतिक मूल्यों—जैसे अहिंसा, करुणा, समानता और सहिष्णुता—को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हालाँकि, वर्तमान समय में इन बौद्ध स्थलों की स्थिति चिंताजनक है। अधिकांश स्थल उपेक्षा, प्राकृतिक क्षरण और मानवजनित गतिविधियों के कारण धीरे-धीरे नष्ट हो रहे हैं। उचित संरक्षण के अभाव में यह अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर भविष्य में समाप्त हो सकती है। अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि इन स्थलों के संरक्षण के लिए टोस और प्रभावी कदम उठाए जाएँ। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण तथा राज्य सरकार को मिलकर इन स्थलों का वैज्ञानिक उत्खनन, संरक्षण और पुनरुद्धार करना चाहिए। साथ ही, इन स्थलों को पर्यटन से जोड़कर इनके प्रति जन-जागरूकता बढ़ाई जा सकती है, जिससे स्थानीय समुदाय भी इनके संरक्षण में भागीदारी कर सके।

अंततः, यह कहा जा सकता है कि पश्चिमी राजस्थान के बौद्ध स्थल भारतीय इतिहास, संस्कृति और पुरातत्व के अध्ययन में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। ये स्थल न केवल बौद्ध धर्म के प्रसार के साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं, बल्कि वे यह भी दर्शाते हैं कि प्राचीन भारत में सांस्कृतिक एकता और विविधता का अद्भुत समन्वय था। भविष्य में यदि इन स्थलों पर और अधिक गहन एवं वैज्ञानिक अनुसंधान किया जाए, तो निश्चित रूप से अनेक नए ऐतिहासिक तथ्य सामने आएँगे, जो भारतीय इतिहास की समझ को और अधिक समृद्ध करेंगे। अतः इन स्थलों का संरक्षण, अध्ययन और प्रचार-प्रसार न केवल ऐतिहासिक आवश्यकता है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक जिम्मेदारी भी है।

### REFERENCES

1. शर्मा, जी. एन. — राजस्थान का इतिहास
2. थापर, रोमिला — अशोक और मौर्य साम्राज्य
3. चंद्र, सतीश — मध्यकालीन भारत
4. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) — उत्खनन रिपोर्ट
5. सिंह, उपेन्द्र — प्राचीन भारत का इतिहास
6. राजस्थान राज्य अभिलेखागार — प्रकाशित अभिलेख
7. Archaeological Survey of India Reports
8. Journal of Indian History — विभिन्न शोध लेख